आखिर क्यों...?

निर्मला जैन
बी.ए.(ऑनर्स)-हिंदी, तृतीय वर्ष, मैत्रेयी महाविद्यालय

जलती हुई शलाखों को आज उन आंसुओं ने बुझा दिया
मकड़ी के जाल की तरह मेरी चीखों को घेर लिया
बंद पिंजरे में आज मेरी सिस्कियों को कैद कर दिया
आखिर क्यों .....?

उन भेड़ियों ने
मेरी आत्मा को छलनी कर दिया
मेरी सांसों को मुझसे छीन लिया
बंद कमरे में कैद मेरे मान-सम्मान को चूर-चूर कर दिया
आखिर क्यों .....?

मेरी चीखों को मेरी मौत में बदल दिया
मेरी जाति, धर्म, नस्ल भेद को अपरिचित-सा बना दिया
मेरे शरीर को गीली मिट्टी की तरह रौंद दिया
आखिर क्यों .....?

उन जालिमों ने
मेरी पहचान को ही मिटा दिया
मुझसे मेरा दर्पण ही छीन लिया
उन कैद दीवारों ने भी मेरा साथ न दिया
आखिर क्यों .....?

उन अंधे लोगों ने
मेरा ही सौदा कर दिया
मेरी मजबूरी को लाचारी में बदल दिया
मेरी उड़ान की पंखुडियों को तोड़ लिया
आखिर क्यों .....?

मेरी सरकार ने
मेरे चरित्र को खेल बना दिया
इंसाफ की दीवारों ने मुझ पर ही दाग लगा दिया
मेरा ही शोषण कर दिया
आजादी की माला उन हत्यारों को पहना दिया
शलाकों की दीवारों ने मुझे ही बंदी बना दिया
आखिर क्यों .....?

मेरे देश ने
मेरे नाम का झंडा लहरा ही दिया
मेरी पवित्रता का ढोंग पीट दिया
मेरे चरित्र पर लगे दागों को मेरी ही चुनरी पर लगा दिया
आखिर क्यों .....?

मेरी चुप्पी को मेरी कमजोरी बना दिया
इंसाफ का कफन पहना कर
सवालों का टोकरा मुझ पर ही लाद दिया
आखिर क्यों .....?

मेरे लोगों ने
मेरे देश ने
मेरी सरकार ने
मेरा ही साथ न दिया
आखिर क्यों .....?